Vol 6 Issue 3 Dec 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

Review Of Research

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.8014(UIF) Volume - 6 | Issue - 3 | December - 2016

मत्तविलास

डॉ. सच्चिदानन्द त्रिपाठी
संस्कृत विभाग, एस.एम.एस.जी. कॉलेज, शेरघाटी.

प्रस्तावना –

कांची नगरी की शोभा का क्या कहना! ऊँची-ऊँची अट्टालिकाएँ जिन पर आकर बादल टिक जाते और गरजते, तो लगता, अट्टालिकाओं की छतों पर मृदंग बजाए जा रहे हैं। वहाँ के फूलों के आपण (बाजार) ऐसे कि नगर में बारहों महीने वसंत उतरा रहता। कांची नगरी क्या, समझो अप्सराओं की कांची (करधनियों) की झंकार।

सत्यसोम एक कापालिक था। वह भी इसी कांची नगरी में रहता था। कपाल या खप्पर के सिवाय उसके पास कुछ नहीं था। फिर भी देवसोमा उस पर रीझकर उसकी संगिनी हो गई थी। नगर में अपार संपत्ति अँटी पड़ी थी, तो कुछ-न-कुछ खाने-पीने को मिल ही जाता। दोनों खप्पर में जो शिक्षा आ जाती, उसे खाते, गोश्रृंग (गाय के सींग से बना बोतल जैसा पात्र) में भरकर छककर मदिरा पीते और मदमत्त होकर पड़े रहते। पंच मकार का सेवन तो कापालिक क व्रत था, इसी को वह अपना तप कहता था।

उस दिन भी दोनों ने छककर मदिरा पी रखी थी। नशे में धुत्त होकर वे गिर-गिर पड़ रहे थे। सत्यसोम की तो जिह्वा पलट रही थी। देवसोमा भी इसके साथ मंदिर वार्तालाप में रस ले रही थी, पर वह देवसोमा को सोमदेवा कहने लगा, तो देवसोमा ने उसे झिड़क ही दिया। सत्यसोम उससे क्षमा माँगते हुए मदिरा का त्याग करने का प्रण करने को उद्यत हो गया।

देवसोमा ने कहा, ''भगवन् मेरे

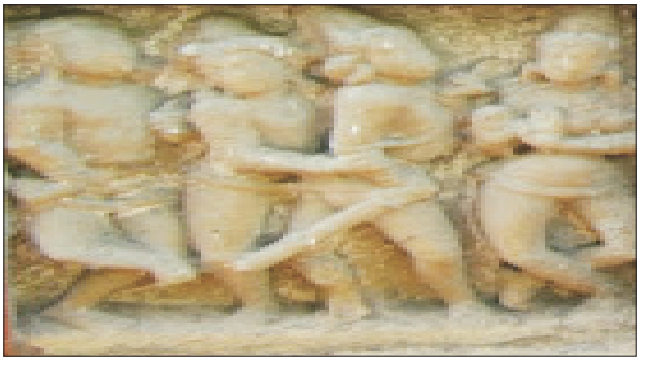

कारण व्रत तोड़कर तपस्या खंडित मत कीजिए।'' इस पर सत्यसोम गद्‌गद होकर भगवान शिव की स्तुति करने लगा। उसने कपाली शिव को ही दीर्घायु होने का आर्शीवाद दे डाला-

पेया सुरा प्रियतमामुखमीक्षणीयं
ग्राह्यः स्वभावललितो विकृतश्च वेषः।
येनेदमीदृशमदृश्यत मोक्षवर्त्म
दीर्घायुरस्तु भगवान् स पिनाकपाणिः।।

(सुरा पीनी चाहिए, प्रियतमा का मुख देखा जाना चाहिए, स्वभाव से ललित और विकृत वेष धारण करना चाहिए....इस प्रकार का मोक्ष मार्ग जिन्होंने दिखा दिया, वे भगवान् पिनाकपाणि शिव दीर्घायु हों।)

देवसोमा ने कहा, '' अर्हत् धर्म को माननेवाले साधु तो संयम और शरीर को कष्ट देने से मोक्ष मानते है।''

सत्यसोम ने कहा, ''पाप शांत हो, पाप शांत हो। तुमने भी किन लोगों की बात छेड़ दी।''

फिर उसने जी भरकर अर्हत् धर्म के अनुयायियों को कोसा, और फिर बोला, ''इन लोगों की चर्चा से मेरी तो जिह्वा की अपवित्र हो गई, इसे मदिरा से ही धोना पड़ेगा।''

फिर क्या था, दोनों सुरापण (शराबखाने) की ओर चल पड़े। सुरापण के द्वार पर पहुँचकर सत्यसोम ने प्रसन्न होकर मद से लड़खड़ाते स्वर में कहा, ''अहा, क्या निराला रूप है सुरापण का, यह तो यज्ञवाट (यज्ञशाला) ही है।''

सुरापण में पियक्कड़ मतवाले होकर नाच रहे थे। ये दोनों भी नाचने लगे। सत्यसोम ने कहा, ''मदिरा तो पिऐंगे, कुछ साथ में चिखौना भी मिल जाए, तो क्या ही आनंद रहे।''

वह देवसोमा के साथ सुरापण से बाहर आया और पुकारने लगा, ''भवति भिक्षां देहि।

मार्ग में जाती किसी श्रद्धालु रमणी ने खाद्य पदार्थ उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा, ''भगवन् यह लीजिए भिक्ष!''

सत्यसोम ने कहा, ''भिक्षा ले लूँ। प्रिये, मेरा कपाल कहाँ हैं?''

देवसोम ने कहा, ''आपका कपाल यहाँ नहीं है।''

सत्यसोम ने चिंतित होकर कहा, ''अरे, मेरा कपाल कहाँ गया? लगता है सुरापण में ही भूल आए।''

देवसोम ने कहा, '' भक्तिन भिक्षा लिए खड़ी है। भिक्षा नहीं लेंगे, तो अधर्म होगा। अभी तो इस गोश्रृंग में भिक्षा ले लीजिए। फिर कपाल को भी खोजते हैं।''

भिक्षा लेकर दोनों कपाल खोजने लगे। सुरापण में कपाल कहीं नहीं दिखा। कापालिक सत्यसोम विलाप करता हुआ कहने लगा, 'अरे-अरे, जब कपाल ही नहीं हैं, तो मैं कापालिक कैसे हो सकता हूँ? मेरा तो सारा तप ही डूब गया।''

दोनों इस विकट समस्या पर विचार भी कर रहे थे कि कपाल के न होने पर सत्यसोम कापालिक कहा जाएगा या नहीं, और जी-जान से कपाल खोज भी रहे थे। कपाल खोजते हुए वे कांची के मार्गो और गलियों में आवाजाही कर रहे थे कि वहाँ से एक बौद्ध भिक्षु नागसेन निकला। वह उपासक घनदास श्रेष्ठी के घर से अपने भिक्षापात्र से भरपूर भिक्षा लेकर आ रहा था और मन ही मन सोच रहा था कि भगवन् तथागत तो परम करूणिक थे, उन्होंने भिक्षुओं से सुखमय जीवन के लिए मध्याह्न में भरपेट मत्स्य-मांस से युक्त भिक्षा और अपराह्न में सरस पान क विधान बनाया है, सुगंध और उत्तम परिधान की भी व्यवस्था दी है। इसके साथ वे स्त्री से रमण और सुरापन का भी विधान कर देते तो कितना अच्छा रहता। लगता है भगवान् ने तो विधान किया ही होगा, इन दुष्ट स्थविरों (बूढ़े भिक्षुओं) ने पिटक पुस्तकों से बुद्ध के वे वचन निकाल दिए हैं, जिनमें ऐसे विधान हैं।

नागसेन मूल त्रिपिटाक पुस्तकें

कैसे मिलेगी इस समस्या पर चिंतन कर रहा था, तभी अपना कपाल खोजते हुए सत्यसोम और देवसोम उधर से निकले। दोनों की दृष्टि बौद्ध भिक्षु पर गई। वह शंकित होकर अगल-बगल में ताकता हुआ अपने चीवर में कुछ छिपाए हुए तेजी से जा रहा था। देवसोम ने कहा, ''भगवन्, हमारा कपाल अवश्य ही इस बौद्ध भिक्षु ने चुराया है। देखिए, वह उसे छिपाकर ले जा रहा है!''

फिर तो कापालिक सत्यसोम भिक्षु नागसेन से भिड़ गया। दोनों में विवाद होने लगा। भिक्षु नागसेन अपना भिक्षापात्र दिखाना नहीं चाहता था, उसे भय था कि उसमें रखे मत्स्य और मांस के व्यंजन ये लोग झपटकर खा जाऐंगे। वह कहता जा रहा था कि हम लोगों को भिक्षा में क्या मिला है, यह किसी को नहीं दिखाते.....

कापालिक ने कहा, '' यह संवृत सत्य है। अब मुझे परमार्थ सत्य का दर्शन करना होगा।''

दोनों में विवाद बढ़ रहा था। देवसोमा अपने संगी सत्यसोम को गोश्रृंग में भरी मदिरा पिला-पिलाकर बौद्ध भिक्षु की जमकर पिटाई करने के लिए उकसा रही थी। नशे में लड़खड़ाते हुए कापालिक ने कहा, ''देवसोमा, इस भिक्खु को भी मदिरा पिला दे, क्योंकि द्वंद्व तो समान बलवालों में होना चाहिए, मैं मदिरा पीकर बलशाली हो चुका। यह भी पिए और फिर मुझसे युद्ध करे।''

भिक्षु नागसेन की दृष्टि देवसोमा के यौवन से उफनाती काया में अटकी थी। उसके मन में लालच जागा कि कम से कम इस रमणी के हाथ से मिली मदिरा चखकर देख ही ले, पर किसी तरह उसने अपने को रोका।

कापालिक और भिक्षु नागसेन में छीना-झपटी होने लगी। भिक्षु की लात खाकर कापालिक धरती पर गिर पड़ा। मदिरा से मतवाली देवसोमा भिक्षु के केश पकड़कर घसीटने का प्रयास कर रही थी, पर भिक्षु तो मंडित था, इसलिए उसके हाथ भिक्षु के मस्तक से फिसलने और वह भी गिर पड़ी। भिक्षु हँसता हुआ उसे उठाने लगा। कापालिक चीखने लगा, देखिए , देखिए, आप लोग, यह दुष्ट भिक्षु मेरी प्रिया का पाणिग्रहण कर रहा है।''

भिक्षु ने कहा, ''मैं तो अपने धर्म का पालन कर रहा हूँ, पतित का उद्धार करना हमारा धर्म है।''
कापालिक ने कहा, ''तो फिर मैं पहले से गिरा हुआ था, मुझे क्यों नहीं उठाया?''

यह सब कोलाहल सुनकर पाशुपत बभ्रकल्प वहाँ आ पहुँचा। वह देवसोमा का पूर्व प्रेमी था। अभी भी उसकी दृष्टि देवसोमा पर थी।

इन लोगों के कहने पर भिक्षु को अपना भिक्षापात्र बताना पड़ा। सत्यसोम ने कहा, ''देखो, देखो, इस भिक्षु ने मेरा कपाल चुराया ही नहीं, उसका रंग और आकार भी बदल दिया है।''

पाशुपत बभ्रुकल्प के सुझाव पर वे न्याय के लिए अधिकरण (न्यायालय) की ओर चल पड़े।

तभी उन्मत्तक (पागल) वहाँ से निकला। उसके पास कुत्ते के मुँह से छीना हुआ कपाल था। वह कपाल बभ्रुकल्प के देने लगा। बभ्रुकल्प ने उसे कपाल कापालिक को लौटाने के लिए कहा। बड़ी कठिनाई से ये सब मिलकर उन्मत्तक से कापालिक का कपाल वापस प्राप्त करने में सफल हो पाए।

संदर्भ-सूची :

१.संस्कृत साहित्य सौरभम, पृष्ठ सं.- ३४
२.संस्कृत साहित्य
३.संस्कृत साहित्य सौरभम, पृष्ठ सं.- ३५

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com